# हरिहर काका

कक्षा–दस

लेखक– मिथिलेश्वर

# ठाकुरबारी–परिचय

गाँव कस्बाई शहर आरा से चालीस किलोमीटर की दूरी पर है। गाँव के पूरब में ठाकुरजी का विशाल मंदिर, जिसे गाँव के लोग ठाकुरबारी कहते हैं।जैसे–जैसे गाँव बसता गया और आबादी बढ़ती गई, मंदिर के कलेवर में भी विस्तार होता गया। लोग ठाकुरजी को मनौती मनाते कि पुत्र हो, मुकदमे में विजय हो, लड़की की शादी अच्छे घर में तय हो, लड़के को नौकरी मिल जाए। फिर इसमें जिनको सफलता मिलती, वह खुशी में ठाकुरजी पर रुपये, जेवर,अनाज चढ़ाते। अधिक खुशी होती तो ठाकुरजी के नाम अपने खेत का एक छोटा–सा टुकड़ा लिख देते।

# हरिहर काका की विशेषताएं–

हरिहर काका चार भाई हैं। सबकी शादी हो चुकी है। हरिहर काका के अलावा सबके बाल–बच्चे हैं। बड़े और छोटे भाई के लड़के काफी सयाने हो गए हैं। दो की शादियाँ हो गई हैं। उनमें से एक पढ़–लिखकर शहर के किसी दफतर में क्लर्की करने लगा है। लेकिन हरिहर काका की अपनी देह से कोई औलाद नहीं। भाइयों में हरिहर काका का नंबर दूसरा है। उनकी दोनों पत्नियों की मृत्यु हो गयी। कूल साठ बीघे भूमि है।

# महंत की विशेषताएं–

- प्रवचन देने वाला
- कुशल वक्ता
- लोभी
- हिंसक स्वभाव वाला
- कथनी करनी में अंतर